Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

निराला का जीवन–वृत्त

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue IX, January-2013, ISSN 2230-7540

निराला का जीवन–वृत्त

Nirala Ka Jeevan Vratta

Sapana Kakher[1] Dr. Urmila Rawat[2]

[1]Research Scholar, Singhania University, Shillong, Meghalaya

[2]Research Supervisor

----------X----------

पारिवारिक परिस्थितिया :–

हिन्दी साहित्य आदिकाल से नवयुग तक की दीर्घ प्रवाहिनी अनेक महान रचियताओं के आवरण से पूर्ण है, जिन्होंने अपने युगानुभव का जीवन्त चित्रण अपने काव्य में कर समाज में जागृति का अद्भुत संचार किया।

आधुनिक काल के स्वर्णयुग 'छायावाद' में एक ऐसी ही कवि प्रतिभा सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं, जो किसी एक अवधि, एक काव्यधारा विशेष अथवा समाज एवं राष्ट्र की परिसीमा में कभी न बँध सके।

निराला का जीवन पौरूषमय पर्वत से निःसृत करूणानीर से प्रवाहित स्त्रोतवाहिनी का भव्य दृष्टान्त है। जीवनक्रम में विभिन्न आरोही–अवरोहों ने जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त उनके मानस एवं तत्सृजित साहित्य को एक अद्भुत गतिशील सौष्ठव दिया है।

हिन्दी साहित्य की अमर विभूति महाप्राण निराला जी का जन्म सन् 1867 ई0 में बंगाल के महिशादल राज्य में हुआ था वैसे तो इनके पूर्वज उत्तर प्रदेश उन्नाव जिले के 'गढ़ाकोला' के निवासी थे। इसी गाँव के निम्न–कान्यकुब्ज ब्राह्मण समाज में एक परिवार 'निराला के पितामह पंडित शिवधारी तिवारी का था जिनके तृतीय पुत्र रामसहाय तिवारी जीविकार्जन के लिए बंगाल में पुलिस सेवा में नियुक्त हुए, बंगाल स्थित महिषादल राज्य में सिपाही के पद पर कार्य करते–करते राज्यकोष संरक्षक के आसन तक इन्होनें उन्नति की। पं0 रामसहाय तिवारी के प्रथम एवं एकमात्र पुत्र सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' थे। प्रथम पत्नी का निधन होने के पश्चात् निःसन्तान होने के कारण इन्होंने दूसरा विवाह रूक्मिणी देवी से किया। रूक्मिणी देवी अत्यन्त सुशील, रूपवती महिला थी। धार्मिक संस्कारों में विशेष रूचि रखती थी।''

''माघ शुक्ल एकादशी सम्वत् 1653 (सन् 1867) ई0 को इस जन्मदात्री ने पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम सूर्ज कुमार तथा साहित्य क्षेत्र में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' प्रसिद्ध हुआ।''

दुर्भाग्य से माँ की वाल्सल्य वर्षा कवि की मन–अवनि पर अधिक समय न हो सकी तथा पुत्र की तीन वर्ष की आयु होते ही रूक्मिणी देवी का शरीरान्त हो गया।

माँ के अभाव तथा पिता की देखरेख में निराला का शैशवकाल व्यतीत हुआ पिता कर्मठ तथा अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे। अतः पिता के कठोर नियन्त्रण में ही निराला को लाड़–दुलार मिला।

आठ वर्ष की अवस्था में निराला का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ समाज के वर्गगत भेद के प्रति विद्रोह का भाव इस अवसर पर उनके हृदय में प्रथमतः उत्थित हुआ।

महिषादल में निराला की शिक्षा प्रारम्भ हुई। इन्होंने सामान्य प्राथमिक शिक्षा बंगला पाठशाला में ही प्राप्त की अध्ययन पूर्ण होने के बाद उन्हें महिषादल हाईस्कूल में भेजा गया।

इस विद्यालय से अंग्रेजी एवं संस्कृत की सामान्य शिक्षा प्राप्त हुई महिषादल में रहने के कारण कवि बंगला भाषा से मातृभाषावत् परिचित थे किन्तु हिन्दी के स्थान पर उन्हें अवधी एवं वैसवाड़ी का ही ज्ञान था इनकी विद्यालय शिक्षा नवीं कक्षा तक ही रही उच्चशिक्षा प्राप्त करने में उनकी रूचि शेष न रही। हाईस्कूल के पठनकाल में ही इन्होंने संगीत, घुड़सवारी तथा कुश्ती में दक्षता प्राप्त की, क्रिकेट और फुटबाल खेलने में प्रवीण रहे।

तरूणावस्था एवं वैवाहिक जीवनः–

चौदह वर्ष की अवस्था में निराला का विवाह–सम्बन्ध पंडित रामदयाल द्विवेदी की पुत्री मनोहरा देवी से हुआ, मनोहरा देवी सौन्दर्य शीला तो थी ही पढ़ी–लिखी तथा सादा ग्रहस्थ जीवन व्यतीत करने वाली कर्मठ नारी भी थी इस सक्षम नारी के ज्ञान–प्रकाश से अभिभूत होकर निराला संगीत एवं साहित्य के आकर्षण से बंध सके।

''प्रिया–प्रणय के प्रलोभन के कारण निराला हाईस्कूल की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए तथा प्रथम बार पिता के कोपभाजन बने। तरूणावस्था में निराला पिता के ही आश्रय पर पत्नी सहित पोषित हो रहे थे, ग्रहस्थी का दायित्व–भार उनके कन्धों पर नहीं था और समाज के नियमों एवं परम्पराओं का उल्लंघन करना उन्हें प्रिय था अतः पिता द्वारा गृह–निष्कासन पर वे श्वसुरालय में चले गये जहाँ उनका भव्य सत्कार हुआ यही से उनकी हिन्दी की ओर रूचि तथा साहित्य साधना प्रारम्भ हुई।''

निरन्तर अस्वस्थता के उपरान्त हार्निया से पीड़ित पिता की मृत्यु सन् 1917 ई0 में हो गई स्वछन्द एवं उच्छंखल जीवन जीने वाले निराला को पिता के अभाव में गृहस्थ जीवन के उत्तरदायित्व का प्रथमतः अनुभव हुआ।

परिवार के भरण–पोषण के लिए उन्होंने महिषादल प्रस्थान किया, पिता से अधिक शिक्षित होने के कारण इन्हें चिट्ठी–पत्री, तहसील–वसूली तथा कचहरी–अदालत से सम्बन्धित काम–काज साधारण वेतन पर प्राप्त हुआ। गृहस्थ जीवन की ओर गम्भीर

www.ignited.in

होते ही निराला के प्रतिकूल भाग्य ने इनके वैवाहिक सुख को अल्प युवावस्था में ही समाप्त कर दिया।

श्वसुर गृह में पुत्र एवं पुत्री को जन्म देकर सन् 1918 में श्रीमती मनोहरा देवी ने अन्तिम प्रस्थान किया। सन् 1914 में प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति पर फैले इन्फ्लुएंजा के महारोग ने इनके परिवार के अधिकाँश सदस्यों को ग्रस लिया दाम्पत्य जीवन के प्रथम चरण पर ही एकाँकी रह गये निराला के कन्धों पर चचेरे भाई के बच्चों समेत छः बाल सदस्यों का पालन–भार आ गया अतः निराला धनार्जन के उद्देश्य से पुनः महिषादल में कार्यरत हो गये।

निराला का व्यक्तित्वः–

कहते है, कि शक्तिवान शरीर में समर्थ आत्मा का वास होता है। निराला का जीवन कष्टपूर्ण वैषम्यों का उदाहरण था और उनका व्यक्तित्व अजेय एवं आत्माभिमानी रणवीर का परिचालक था। निराला के व्यक्तित्व को लक्षित करते हुए ही डा0 धनन्जय वर्मा ने लिखा है–

''एक कर्जस्वित अहं का धारण असाधारण शरीर ही कर सकता है जो निरन्तर संघर्षों में कष्टों को भी झेल सके।''

निराला का विशाल हृष्टपुष्ट एवं पौरूषमय कृषक शरीर बैसवाडे की ही देन है सामान्य से अधिक लम्बी कदकाठी तथा युवावस्था में तैराकी, कुश्ती आदि में नियमित अभ्यास ने उनकी देहयष्टि को अनूठे सौन्दर्य से मंडित कर दिया था– प्रत्यक्षदर्शी डा0 रामविलास शर्मा के शब्दों में–

''व्यक्तित्व की सूक्ष्म तलवार के लिए उन्हें म्यान भी ऐसा अच्छा मिला है कि बहुत से लोग उसी को देखते रह जाते है। युक्तप्रान्त के निवासियों में वे असधारण रूप से लम्बे है। लखनऊ के रायल सिनेमा में बैठे हुए पठान को यह यकीन दिलाना मुश्किल था कि निराला इसी मुल्फ का है और पश्तो नहीं बोल सकता।''

निराला को स्वयं अपने स्वस्थ एवं दृढ़ डील–डौल पर अभिमान था कृषक वातावरण में व्यायाम आदि से सुगठित बने कवि–व्यक्तित्व के गवौन्नत सौष्ठ व की तुलना उनके परम मित्र नवजादिक लाल ने ग्रीस रोम की प्रतिमाओं से की हैं किन्तु दैहिक कठोरता के बावजूद मुख पर रूक्षता अथवा अहंकार का कोई स्थान नहीं था, बालसुलभ मन्द मुस्कान उनके पतले अधरों की शाश्वत सखी थी। निराला के अद्भुत व्यक्तित्व की समग्र बाहय शोभा का उद्घाटन उनके समकालीन गंगाप्रसाद पांडेय ने इन शब्दों में लिखा–

''लम्बा चौड़ा विशाल मांसल शरीर बड़े–बड़े रतनारे नेत्र, लम्बी शाल की शाखा सी भुजाएँ, शाश्वत मन्द मुस्कान में सिक्त पतले आकर्षिक होंठ, कवियोचित कम्बुकंठ और वृषभ कंध जान पड़ता था मैं किसी रोमन मूर्ति के सामने खड़ा हूँ।''

ऐसी अवस्था में निराला सड़को पर भ्रमण करते हुए दृष्टि का आकर्षण उपादान बने रहते थे, किन्तु जिस दिन किसी कवि–सम्मेलन अथवा साहित्यक सभा में उनका भाषण अथवा वाचन होता तो उनकी तत्परता विशेष दर्शनीय होती थी उस दिन अपने घर का झाड़ू–बुहारी मनोयोग से करते, सुगन्धित साबुन से स्नान करते तथा शाम तक धुले वस्त्र पहनकर बालों में इत्र लगाकर तैयार हो जाते, बाहय सौन्दर्य की ओर निराला की अपेक्षा से भी उनकी छवि–दर्शनीयता में व्यवयता की मात्रा कम न हो सकी तथा उनके अन्तःकरणीय स्वरूप को भी सार्थक बनाने में यह पूर्णतः सफल रही।

निराला का आन्तरिक व्यक्तित्व :–

निराला के व्यक्तित्व का यह द्वितीय पक्ष आत्मिक सौन्दर्य की सात्विक निर्मल आभा से परिपूर्ण है। कवि का अन्तरतम जीवनाभावों तथा युगावस्था में निरन्तर परिवर्तनीयता से आन्दोलित रहा जिसका प्रकाशन उनकी रचनाशीलता में प्रत्यक्षतः हुआ है, मातृहीनता एकाँकीपन और पिता के अनुशासनपूर्ण कठोर व्यवहार ने बालक निराला को अन्तर्मुग्धता प्रदान की, उनकी जिज्ञासाओं को आत्मकेन्द्रित कर उन्हें चिन्तनशील एवं स्वनिर्भर बनाया तो दूसरी ओर उनमें स्वभावगत औदात्य सहिष्णुता तथा निर्भीकता का स्थायी गुण भी भर दिया।

स्वभाव की उग्रता निराला को पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिली तथा पारिवारिक जीवन का छायाचित्र उनके मानसपटल पर सदैव अंकित रहा। अतः वे प्रारम्भ से ही रूढ़ियों के प्रति प्रतिक्रियायें व्यक्त करते थे। कान्यकुब्ज समाज की परम्पराओं के पूर्णतः प्रतिकूल होकर पुत्री–परिणय में वैवाहिक रीतियों के प्रति विद्रोह से लेकर उस समाज के खान–पान, रहन–सहन आदि के नियमों का भी उल्लघंन उन्होनें दृढ़तापूर्वक किया, उनका कथन था–

''रूढ़ियों से अभी जन–मस्तिष्क पूर्ववत जकड़ा हुआ है इन पर बार–बार प्रहार द्वारा इसकी श्रृंखला तोड़ देनी है।'' भाग्य और व्यर्थ मान्यताओं से विद्रोह के लिए वे दृढ़ प्रतिज्ञ थे उनका अहं इतना ओजस्वी था कि किसी भी क्षेत्र में उन्होंने समझौता करना स्वीकार नही किया।

कवि के दुर्दम्य पुरूषार्थ ने आर्थिक संघर्षों में अनवरत संलग्न रहने की शक्ति उन्हें दी।

एक ऐसे युग में उत्पन्न होकर ब्रह्य शिष्टाचार एवं दिखावटी व्यवहार को सब कुछ मानते थे। निराला ने विशिष्टता के नये प्रतिमान उत्पन्न किये उनके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता शिष्टाचार के कृत्रिम स्वरूप को खंडित कर सत्याचार की प्रतिष्ठा करने में थी।

अपनी स्पष्टवादिता एवं निर्भीक वाचन के कारण उन्हें उस युग में उत्कृष्ट साहित्यक विरोध का सामना करना पड़ा इन विशेषताओं ने जहाँ उनके प्रति अनेक लोगों में भ्रम एवं आक्रोश को उत्पन्न किया, वहीं युवा 'पीढ़ी' के रचनाकारों को अपनी स्वच्छन्द भावनाओं से प्रभावित किया। कृत्रिमता एवं मिथ्या भाव से निराला नितान्त अपरिचित थे यही कारण है, कि वे स्वयं श्रेष्ठ होने का विश्वास रखते हुए भी दूसरे साहित्यकारों के प्रति निर्मल स्नेह सद्भावना एवं सम्मान उनके विशाल हृदय में व्याप्त था।

निराला का जीवन सादगी का सजीव दृष्टान्त था। रहन–सहन में कहीं अभिजात्य का चिन्ह न था अपने सभी कार्य भोजन पकाने से लेकर गृहस्थल की देखभाल उनकी दैनन्दिनी में शामिल थे वे अपनी दैनिक चिन्ताओं को विस्मृत कर इस अवढरदानी ने परिजनों की आर्थिक कठिनाइयों के समाधान को प्राथमिकता दी। उन्होंने एक सन्त के समान अभावयुक्त जीवन व्यतीत किया किन्तु निर्धन व्यक्ति को तनिक भी आवश्यकता को लक्षित कर वे अपने नये परिधान लिहाफ, कम्बल, जूते आदि जो उनके लिए भी आवश्यक थे दान कर देते थे।

निराला के व्यक्तित्व में महामानवीयता का पूर्ण अभास मिलता है जिसमें साधारण मनुष्य से पृथक दिव्यगुण–प्रवृत्तियों का समावेश तथा संवेदनाओं को अविरल प्रवाह है किन्तु महामानव होते हुए भी कतिपय मानवोचित दुर्बलताओं की अवस्थिति उनके व्यक्तित्व में परिलक्षित होती है।

भागीरथ मिश्र कहते हैं– ''किसी भी सभा में उनकी उपस्थिति तब तक एक आतंक का वातावरण बनाये रखती थी, जब तक कि वे स्वयं कोई विनोदपूर्ण फबती नहीं कसते थे लेकिन उनके अत्यन्त विनोदपूर्ण अवसर पर भी लोगों को संयत हास–परिहास करने का ही साहस होता था, क्योंकि ऐसा भय सदैव रहता था कि निराला जी की विनोद–मुद्रा कहीं उग्र क्रोध में परिणत न हो जाये।''

इसी अवगुण के कारण स्वयं हृदय में किसी के लिए वैर भाव न होते हुए भी उन्हें अपने मित्रों से भी विरोध मिला निरन्तर उपेक्षापूर्ण व्यवहार के कारण उनका कोमल मन इतना खीझा हुआ था कि तनिक प्रशंसा भी उन्हें प्रसन्न करने को पर्याप्त थी। जीवन–भर विषमताओं और अनौचित्य के विरूद्ध कर्मरत उनका हृदय हर ओर व्याप्त निज–स्वार्थ की निकृष्ट कृति से इतना क्षुब्ध हो गया था कि कहीं वे करूणार्द होकर मानव कल्याण के लिए दुःखित हो जाते तो कहीं व्यंग्यतापूर्ण उक्ति वाचन करने लगते आद्योपान्त संघर्षो के क्रम ने उनके व्यक्तित्व को विकसित और खंडित भी किया भौतिक कष्टों और दैवी विपत्तियों की अजीवन अवस्थिति के मध्य निराला का दार्शनित्व भी उर्ध्वमुखी हुआ 'समन्वय' सम्पादनकाल में उन्होंने अद्वैतवादी दर्शन के गहन मंथन एवं मनन द्वारा आत्मिक अहम को पोषित किया इसी को लक्षित करते हुए गंगाप्रसाद पांडेय ने लिखा है–

''निराला अहंकारी नहीं है, हाँ वह आत्मचेतना अवश्य है अपनी दार्शनिक मनोवृत्ति के कारण संसार से अलगाव की जो एक आस्था है वहीं निराला में अहंकार सी जान पड़ती है।''

निराला के जीवन काल में मानसिक विशान्ति की अवधि में वे व्यवहारिक जगत से विमुख होकर पूर्णतः अंतःकेन्द्रित हो उठे थे कभी एकदम प्रसन्न हो उठते और कभी उदासीन नियति के कठोर स्वरों से उनकी चेतना अव्यवस्थित असमान्य अवश्य हुई किन्तु निराला का काव्य–व्यक्तित्व तटस्थता के गुण से सम्पूर्ण वाड्मय में उज्जवलाभासित रहा है। दार्शनिक चिन्तन से वे प्राप्त निर्वैयक्तिक्ता के आधार पर एक ओर आत्मानुभूतियों का सहज प्रकाशन हुआ तो दूसरी ओर लोकजीवन की समान्य गतिविधियाँ भी अंकित हुई स्वयं निराला विराट बादल की भाँति थे– सदा अपराजित, अभी न होगा मेरा अंत–के विश्वास से आपूर्ण–जो एकाध स्थल पर श्रांत–कलात होकर भी महाकाव्य की धीर गम्भीर मानव नायक भी हो सकता है प्रो0 पी0 जयरामन का कथन है–

''व्यक्तित्व की असाधारण परिव्याटित के कारण ही उनके साहित्य की पृष्ठभूमि में भारतीय दर्शन, ऐतिहासिक चेतना, सांस्कृतिक आत्मा, सामाजिक और राजनीतिक क्रान्ति–सभी एक जगह एकत्र हो गये है।''

इस सामान्य मानव कवि में ओजत्व के साथ कोमल सौहार्द्र तथा सिंह–गर्जन के साथ श्रृंगार एवं कल्पना का सुधा–वर्णन भी है। अतः प्रभाकर माचवे का कथन उचित प्रतीत होता है–

''हिन्दी का यह अभिशप्त सूफी, यह मस्ताना फकीर, यह क्रान्तिकारी सौन्दर्यदर्शी, यह दार्शनिक सहृदय सब विशेषणों के बाद भी विशेष्य है।''

अपने समकालीन कवियों की तुलना में निराला की छवि एक ओर जटिल विरोधाभासों से परिपूर्ण है। विभिन्न विषम गुणों से संयुक्त होकर भी निराला के व्यक्तित्व में सत्य का प्रकाश तथा निश्छलता का सामंजस्य है नावीन्य और प्राच्य का अद्भुत संगम है जो उन्हें विराट और असाधारण की उपमा देता है।

निराला का काव्य–कृतित्वः–

हमें यह देखना है कि किन विषम परिस्थितियों ने उनके प्रसन्न और उल्लासपूर्ण व्यक्तित्व को क्रमशः अवसाद और असन्तुलित मानसिक अवस्था में परिणत कर दिया हमें निराला जी के व्यक्तित्व में होने वाले परिवर्तनों के तथ्यों की जानकारी प्राप्त करनी आवश्यक है।

''यद्यपि निराला जी को जीवन प्रारम्भ से ही संघर्षों का सामना करना पड़ा, परन्तु तरूणावस्था में उन्होंने इन संघर्षों की परवाह नहीं की और विपरीत परिस्थितियों के रहते हुए भी निरन्तर शक्ति सौन्दर्य और अह्लाद से भरी काव्य रचनायें प्रस्तुत करते रहें''

कविता के क्षेत्र में हम देख चुके हैं सन् 1936 तक की उनकी कविता की मुख्य चेतना उल्लासमयी है यदि हम उनके गद्य उपन्यासों को देखें तो उनकी अप्सरा (1931), अलका (1933), प्रभावती (1936) और निरूपता (1936) उनकी यह कृतियाँ पूर्ण स्चछन्दतावादी मनोवृत्ति का परिचय देती है इसके पश्चात् की रचनाओं में नई प्रवृत्तियाँ भी दिखाई देने लगी थीं सन् 1927 के आस–पास 'मतवाला' का सम्पादन कार्य छोड़कर निराला जी कुछ दिनों तक अपने गाँव गढ़ाकोला (जिला उन्नाव) में रहने लगे थे इस समय उनकी कोई नयी रचना का प्रकाशन नहीं हुआ जिससे उनका आय का कोई साधन न था।

इनके परिवारिक दायित्व में इनका अपना परिवार एक पुत्र और एक पुत्री तो थी परन्तु कई भतीजे भतीजियों की जिम्मेदारी उनका भरण–पोषण ये ही करते थे।

गाँव पर खेती बारी की कोई व्यवस्था नहीं थी, तब निराला जी लखनऊ गंगा पुस्तक माला प्रकाशन संस्था में आये इसी प्रकाशन संस्था से 'सुधा' नामक पत्रिका प्रकाशित होती थी उसके लिए कविता लेख लिखने लगे, परन्तु इस माध्यम से इनकी आय इतनी कम थी कि ग्रहस्थी का भार उठाना कठिन था। और 1930–31 के आस–पास इन्होनें सुधा पत्रिका के सम्पादकीय कार्य के अतिरिक्त उपन्यास और कहानियाँ लिखने लगे पर इनकी आर्थिक कठिनाईयाँ अब भी दूर न हुई। निराला जी के स्वभाव में माँगने की प्रवृत्ति रंचमात्र न थी अतएव जो कुछ मिलता उसी में संतोष करना पड़ता।

निराला जी में स्वाभिमान की प्रवृत्ति भी इतनी प्रमुख थी कि वे किसी की एक बात सुनने वाले न थे सुधा के सम्पादकीय कार्य में उन्हें यशेब्ठ स्वतन्त्रता रहती थी पर वे अपने मालिक को अपना मित्र समझकर ही व्यवहार करते थे। अगर दूसरे पक्ष से असम्मान का भाव दिखाई देता तो निराला जी के लिए

असहनीय था। इन्हीं कारणों से निराला जी सुधा का सम्पादकीय कार्य बहुत दिनों तक नहीं कर सके।

फिर कुछ दिन बाद सन् 1932 में कलकत्ते से प्रकाशित रंगीला नाम का एक साप्ताहिक पत्र निकाला गया, मगर यह कुछ दिन ही चल पाया और निराला जी का सम्पर्क इस पत्र में कुछ दिन ही रह पाया।?

1933 के पश्चात् निराला जी फिर लखनऊ में रहे, परन्तु इस दौरान उन्होंने कहीं नौकरी नहीं की और साहित्य लेखन में ही अपना खर्च चलाते रहे परन्तु उनके यहाँ मेहमानों की कमी न थी निराला जी अपना ध्यान कम रखते और अतिथियों का अधिक इसी समय इनका लड़का रामकृष्ण त्रिपाठी लखनऊ के भारतखण्डे संगीत विद्यालय मे संगीत शिक्षा पर अध्ययन करने लगा उसका भी खर्च निराला जी को ही वहन करना पड़ता था।

पुत्री का निधन परिवर्तित मनोभावनाः–

सन् 1935 के आसपास उनकी एकमात्र पुत्री सरोज का कुछ कारूणिक परिस्थितियों में निधन हो गया। सरोज की स्मृति कविता में निराला जी ने उस घटना को लेकर मर्मस्पर्शी उद्‌गार व्यक्त किये। इसी समय से उनकी मनोदशा में परिवर्तन आने लगा फिर लखनऊ उन्हें छोड़ देना पड़ा, कुछ दिन वे उन्नाव युग मन्दिर में सुमिता कुमारी सिन्हा तथा उनके पति चौधरी साहब के साथ रहे।

गीतिका के अनेक गीत यही लिखे गये इस अवधि में निरन्तर निराला जी की व्यक्तिगत मनोदशा भी विकार की सूचना देने लगी थी, वे अकारण ही एकाएक हँस पड़ते थे। कभी–कभी अपने आप बाते करने लगते थे और कभी स्वयं प्रश्न करते और खुद ही उत्तर देते थे। आरम्भ में वे बड़े संकोच के साथ रहते थे।

विच्छेप की स्थितिः–

इसमें सन्देह नहीं ''कि 1941 के बाद निराला जी की मनोदशा और चिन्ताजनक होती चली गई और वे वास्तविकता से दूर काल्पनिकता में व्यवहार करने लगे, वे आपस की मण्डली या गोष्ठी में ही नहीं बल्कि सार्वजनिक रूप में भी अपनी विश्रंखल मनोवृत्तियाँ का इजहार करने लगे थे।''

सन् 1950 के आसपास वे प्रयाग में रहने लगे और 10 वर्षों तक वही रहे। इसी अवधि में उनकी मनोदशा के बहुत से वर्णन पत्र–पत्रिकाओं में भी छपे। कुछ लोगों ने यह बताने का प्रयत्न किया कि निराला की मानसिक स्थिति बिल्कुल स्वस्थ है और उनमें विकार देखने वाले स्वयं विकृत बुद्धि के हैं। जिन्होंने निराला के व्यक्तित्व को नया मोड़ दिया और क्रमशः उन्हें अवसाद और विच्छेप की स्थिति में पहुँचाया है। व्यक्तित्व की पहचान उन्हें सन् 1915 से होने लगी थी। जब निराला जी किशोरावस्था को पाकर तरूण आयु में प्रवेश करने लगे थे और जब उन्हें अपने दायित्व को समझने का बोध होने लगा था उनके सभी संस्मरण लेखकों ने और स्वयं उन्होंने भी इस बात की सूचना दी कि उनका आरम्भिक समय काफी अच्छी परिस्थितियों में व्यतीत हुआ।

यद्यपि उनके पिता बंगाल के महिषादल स्टेट में एक साधारण कर्मचारी थे, परन्तु निराला जी का सहचर्य विशिष्ट व्यक्तियों से हो गया था और वे उनके साथ रहकर अच्छी जानकारी प्राप्त कर लेते थे वे फुटबाल खेलने में निष्णात थे और राजदरबार में उपलब्ध समस्त सुविधाओं का वे उपभोग करने लगे थे। परन्तु उनके पिता का निधन (सन् 1918–1919) के पश्चात् उनको स्टेट में ही नौकरी करने को बाध्य होना पड़ा, परन्तु वे जिस स्थान पर एक राज परिवार के साथ रहते थे वही अनुचर होकर रहना स्वभावतः उनके अनुकूल न था, फिर निराला जी की प्रकृति में महत्वाकांक्षा के बीज भी बड़ी मात्रा में मौजूद थे। फलतः उन्हें महिषादल की नौकरी छोड़ देनी पड़ी और कलकत्ता जाकर स्वतन्त्र लेखन का कार्य अपनाना पड़ा। सन् 1923 के आसपास आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रयत्न से रामकृष्ण आश्रम में प्रकाशित होने वाले दार्शनिक–आध्यात्मिक पत्र के सम्पादक का कार्य मिल गया।

कुछ समय पश्चात् मतवाला नामक साहित्य पत्र प्रकाशित हुआ और निराला जी उसके सम्पादकीय विभाग में आ गये। 1924–1927 तक स्वर्वकाल कह सकते हैं उनकी अनेक रचनायें 'मतवाला' में मतावाला पर प्रकाशित होती रही इसे हमं निराला जी का कार्य करते समय उनकी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति 'मतवाला' के संचालक श्री सेठ महादेव प्रसाद किया करते थे।

वास्तव में स्वच्छन्दतावादी प्रकृति की अधिकांश रचनायें इन्हीं दिनों प्रकाशित हुई। इस समय निराला जी युवावस्था के शीर्ष बिन्दु में थे और उनकी प्रतिभा अपने पूर्ण उन्मेष में थी।

1928 के पश्चात् भारतीय परिस्थितियों में निराला जी के साथ एक बड़ा परिवर्तन घटित हुआ, वे कलकत्ता में बीमार पड़ गये और वापस घर आ गये, इसके साथ ही उनकी पत्नी का देहान्त तथा अन्य कुटुम्बियों का एक महामारी में एक साथ निधन हो गया। जिससे निराला जी को मानसिक आघात हुआ। 1930 के बाद देश में मंदी का दौर आया, बेरोजगारी बढ़ी, मध्य वर्ग के लोगों का शोषण होने लगा, आर्थिक समस्या बढ़ गई। कोई भी ऐसा साप्ताहिक या मासिक पत्र न था जिसमें निराला जी को कार्य मिल सके। इन वर्षों में निराला जी को कठिन आर्थिक परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, जिससे उनकी मानसिक स्थिति काफी विचलित हुई और इस स्थिति ने उन्हें काफी क्षुब्ध कर दिया।

निराला जी को सामाजिक परिस्थितियों के प्रति व्यंग्य का भाव इसी समय उत्पन्न हुआ और उनके काव्य में दिखाई देने वाली यथार्थोन्मुखी प्रवृत्तियाँ उदय होने लगी। सामराज्यवादी अनुशासन का पहिया निरन्तर घूमता हुआ भारत का भविष्य भाग्य के सहारे चल रहा था जिससे लक्ष्य की प्राप्ति निश्चित नहीं थी। उसने जनमानस की आत्मा को केवल चिंतित ही नहीं किया, वरन् अन्तर्मुखी आदर्श पर भाग्यवादी बना दिया। निराला का कवि व्यक्तित्व, अनुभूति की व्यजंना में नहीं अनुभवगत विचारधारा में व्यक्त किया। यही कारण है कि ''विषय को बौद्धिक धरातल से देखने के कारण शिल्प और निवेदन–योजना में स्वच्छन्दता दिखाई देती है।''

उनकी व्यक्तिगत परिस्थितियाँ उन्हें कठोर यथार्थ के अधिक समीप ले जा रही थी। सन् 1936 के पश्चात् जब हिन्दी में प्रगतिवादी आन्दोलन का सूत्रपात हुआ तब निराला जी ने मार्क्सवाद की द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विचारणा को कभी नहीं अपनाया।

यूँ तो निराला की कविता सन् 1916 के पश्चात् लिखी जाने लगी थी परन्तु उनका पहला काव्य संग्रह 'अनामिका' नाम से 1921 में प्रकाशित हुआ तथा अनामिका विशुद्ध स्वच्छन्दतावादी कृति है। 'पंचवटी' की स्वच्छन्दता बिहार करती हुई राम और सीता की

www.ignited.in

प्रथम झाँकी सौन्दर्य और वीरत्व के मिलन की ही परिचायिका है। प्रकृति सौन्दर्य–भूमि पर नारी की सुन्दर मूर्ति और वीर पुरूष का पौरूष इससे बढ़कर स्वच्छन्दतावाद के उपरकण और क्या होंगे।

परिमल संग्रह 1930 में प्रकाशित हुई। ओजस्विता, प्रखरता और आवेग की दृष्टि से परिमल की कुछ रचनायें नूतन दिशा का संकेत करती हैं। इसी के साथ ही निराला जी की गीत सृष्टि भी यही से प्रारम्भ होती है। परिमल के गीत प्रकृति, सौन्दर्य वर्णन, ऋतु सौन्दर्य से सम्बन्धित हैं। 'यमुना' में अतीत का स्वर्ण स्वप्न समाया हुआ है। यह सब छायावाद स्वच्छन्दतावाद की नयी भूमियाँ है। जिनसे निराला जी का काव्य समृद्ध हुआ है। इन समस्त रचनाओं में प्रयास की कृत्रिमता कहीं नहीं है। ये यौवन काल की अस्थाई अभिव्यक्तियाँ हैं। इसी प्रकार एक अज्य रचना है जिसमें एक ग्रामीण नारी का तालाब में स्नान करते समय का दृश्य दिखाया गया है। इस नारी की 'खजोहरा' के संसर्ग से जो दुर्गति दिखाई गई है वह यथार्थतः की सारी सीमाओं का उल्लंघन कर गई है। यथार्थवाद का अर्थ यदि किसी नारी की दुर्दशा दिखाना है तो इस कविता को अवश्य हम यथार्थवादी कहेंगे।

सहायक ग्रंथी

1. अणिमा – लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, नवीन संस्करण–सन्–1975ई0

2. अनामिका – भारती भण्डार लीडर प्रेस, सम्वत्–2005

3. अपरा – बही ग्यारहवाँ संस्करण

4. असंकलित कविता – सम्पादक नवलकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन हेतु सन्–1985ई0

5. अर्चना – निरूपमा प्रकाशन शहराबाग, प्रयाग

6. आराधना – साहित्यकार संसद, प्रयाग प्रथम संस्करण सम्वत्–2010

7. कुकुरमुत्ता – लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद सन्– 1969ई0

8. गीत गुंज – हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी द्वितीय संस्करण

9. गीतिका – भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद तृतीय संस्करण सम्वत्–2005

10. तुलसीदाय – भारती भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद तृतीय संस्करण सम्वत्–2005

11. नये पत्ते – लोक भारती प्रकाशन सन्–1973ई0

12. परिमल – गंगा पुस्तक माला कार्यालय, लखनऊ बारहवाँ संस्करण सन्– 1972ई0

13. बेला – निरूपमा प्रकाशन शहराबाग, प्रयाग